रेखाचित्र की परिभाषाएँ

1. हिंदी – गद्य की गौण विधाओं में रेखाचित्र एक प्रमुख वह विधा हैं, जिसमें किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम - से - कम शब्दों में मर्मस्पर्शी एवं सजीव अंकन किया जाता है। रेखाचित्र अंग्रेजी के 'स्केच' (Sketch) शब्द का पर्याय है, जिसका अर्थ 'चित्रकला' है। रेखाचित्र में 'स्केच' का अभिप्राय उन चित्रों से होता है, जिनमें रेखाओं के द्वारा चित्र उकेरा जाता है। साहित्य में रेखाचित्र से तात्पर्य एक ऐसी विधा से है – "जिसमें कम - से कम शब्दों में कलात्मक ढंग से किसी व्यक्ति, वस्तु या दृश्य की अभिव्यक्ति होती है। इसमें साधना शब्द होते है, रेखाएँ नहीं।

2. 'रेखाचित्र' की शब्दचित्र भी संज्ञा है। इस प्रकार रेखाचित्र का अर्थ है – रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति, जीव, पदार्थ या वस्तु का ऐसा सजीव, भावपूर्ण अंकन करना कि उसका हू-ब-हू चित्र पाठक के मानस पटल पर अंकित हो जाये। रेखाचित्र की परिभाषा देते हुए भगीरथ मिश्र ने लिखा है कि – "अपने सम्पर्क में आए किसी विलक्षण व्यक्तित्व अथवा संवेदना जगाने वाली सामान्य विशेषताओं से संयुक्त किसी प्रतिनिधि चरित्र के मर्मस्पर्शी स्वरूप को देखी-सुनी या संकलित घटनाओं की पृष्ठभूमि में इस प्रकार उभार कर रखना है कि उसका हमारे हृदय में एक निश्चित प्रभाव अंकित हो जाए, रेखाचित्र या शब्दचित्र कहलाता है।

3. डॉ . नगेन्द्र की यह मान्यता है कि – "जब चित्रकला का यह शब्द साहित्य में आया तो इसकी परिभाषा भी स्वभावतः इसके साथ आयी अर्थात् रेखाचित्र एक ऐसी रचना के लिए प्रयुक्त होने लगा, जिसमें रेखाएँ है पर मूर्तरूप में नहीं अर्थात् पूरे उतार - चढ़ाव के साथ। दूसरे शब्दों में कथानक का उत्तर - चढ़ाव उसमें हो, तथ्य के उद्‌घाटन मात्र नहीं।

4. बकौल बच्चन सिंह – "रेखाचित्र एक ऐसा साहित्यिक चित्र है, जिसमें किसी की अभिव्यक्ति, संक्षिप्तता और सादगी से निर्मित कलम का जादू पाठकों पर अपना रंग जमा लेता है।रेखाचित्र के साथ - ही - साथ शब्द चित्र को भी अपनाया जा सकता है।

उपर्युक्त परिभाषाओ से यह स्पष्ट हो जाता है कि रेखाचित्र में कम-से-कम रेखाओं द्वारा शब्दचित्र के रूप में उकेरा गया एक ऐसा मार्मिक, भावपूर्ण एवं सोद्देश्य आख्यान है, जिसमें किसी व्यक्ति, वस्तु इत्यादि का चरित्र साहित्यकार की रागात्मकता से सम्पृक्त होकर चित्रात्मकता, कलात्मकता, मनोरंजनात्मकता एवं प्रभावोत्पादकता के धरातल पर स्थान पाता है।

रेखाचित्र की विशेषताएँ –

रेखाचित्र की सामान्य प्रवृत्तियों को इस प्रकार देखा जा सकता है –

1. रेखाचित्र रेखाओं का ऐसा सजीव चित्र होता है कि पाठक के सम्मुख उस व्यक्ति, घटना या प्रसंग का हू-ब-हू चित्र साकार हो उठता है। चित्रात्मकता रेखाचित्र की आत्मा होती है।

2. रेखाचित्र पढ़कर किसी वस्तु, व्यक्ति आदि का चित्र ही हमारे सामने नहीं खिंच जाता और पात्र का चरित्रोद्‌घाटन ही साकार नहीं होता बल्कि विवेच्य विषय के प्रति लेखक की सहानुभूति, आत्मीयता, रागात्मकता से भी पाठक प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

3. रेखाचित्र मनुष्यों, पशुओं के अतिरिक्त पेड़, जंगल, घाटी, निर्झर इत्यादि किसी विषय पर लिखा जा सकता है। रेखाचित्र का संसार कल्पना-जगत् पर आधारित न होकर वास्तविक यथार्थ एवं सत्यता पर आधारित होता है।

4. रेखाचित्र अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों का हो सकता है।

5. रेखाचित्र का कलेवर संक्षिप्त होता है। रेखाचित्रकार थोड़ी-सी आड़ी-तिरछी रेखाओं द्वारा ही विषय को मूर्त रूप प्रदान करता है।

6. संक्षिप्तता के साथ-साथ सांकेतिकता और स्थिरता की प्रमख विशेषताएँ होती हैं। रेखाचित्र के कथानक में बिखरे हुए सूत्र सांकेतिक रूप में ही स्थान पाते हैं। रेखाचित्र में व्यापकता, जीवन के तथ्यात्मक व्यौरे इत्यादि के लिए जगह नहीं होती। रेखाचित्र चित्र की भाँति स्थिर होता है। उसमें जीवन का संघर्ष अथवा कोई उतार-चढ़ाव नहीं होता है।

7. एकात्मकता, तटस्थता, भावात्मकता, मार्मिकता के साथ-साथ जीवन और प्रवाहपूर्ण भाषा एवं चित्रात्मक शैली रेखाचित्र की मुख्य विशेषताएँ है।

8. रेखाचित्र में मनोरंजनात्मकता, प्रभावोत्पादकता के साथ - साथ पाठकों के हृदय में छिपे भावों, विचारों, वृत्तियों को जाग्रत करने की अद्‌भूत क्षमता होती है।

रेखाचित्र के तत्व

गद्य की अन्य विधाओं की भाँति रेखाचित्र का सृजन भी अनेक तत्वों के आधार पर होता है किन्तु रेखाचित्र के तत्त्व कुछ पृथक् होते है, इनका अस्तित्व कुछ भिन्न होता है। रेखाचित्र के तत्त्वों को इस प्रकार देखा जा सकता है -

1. विषयवस्तु— विषयवस्तु अथवा वर्ण्य - विषय रेखाचित्र का मुख्य तत्त्व अथवा मूलाधार होता है, जिसकी भित्ति पर रेखाचित्र का सृजन होता है। रेखाचित्र का थीम, उपकरण या प्लॉट कोई व्यक्ति (सामान्य या विशिष्ट), वस्तु घटना या दृश्य हो सकता है, जिसने कहीं - न - कहीं और किसी–न - किसी रूप में लेखक को प्रभावित किया हो। सत्यता, यथार्थता और वास्तविकता के संस्पर्श के साथ-साथ रेखाचित्र की भावभूमि अनुभूति के धरातल पर टिकी होती है। रेखाचित्रकार रेखाचित्र में यथार्थ के साथ-साथ कल्पना का भी आश्रय लेता है। "रेखाचित्र में कल्पना उपकारक तत्त्व है, जो यथार्थ से कहीं टक्कर नहीं लेती बल्कि यथार्थ को गहराने का कार्य करती है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि रेखाचित्र में कल्पना के स्तर पर भावात्मक उड़ान नहीं भरी जा है। इससे रेखाचित्र की स्थूल रेखाओं की अन्विति भंग होने का भय रहता है। रेखाचित्र की कथावस्तु में मौलिकता, वास्तविकता, विश्वसनीयता, प्रवाहमयता, सांकेतिकता, रोचकता इत्यादि के गुण अपेक्षित होते हैं।

2. पात्र का चरित्रोद्‌घाटन— रेखाचित्र में लेखक शब्द-रेखाओं के द्वारा वर्ण्य - व्यक्ति के चरित्र का उद्‌घाटन करता है। पात्र के चरित्रोद्‌घाटन में रेखाचित्रकार संकेतों के माध्यम से उसके चरित्र की बारीक - से - बारीक परतों को उघाड़ता है और सहृदय पाठक से अपेक्षा करता है कि वह सांकेतिक रेखाओं के बल पर एक मीनार खडी कर ले। वस्तुतः रेखाचित्र में लेखक कम-से-कम शब्दों में वर्ण्य-व्यक्ति के बाह्य एवं आंतरिक पक्ष का उद्‌घाटन करता है। डॉ. गोविंद त्रिगुणायत ने लिखा है कि - "रेखाचित्र व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना का शब्दों द्वारा विनिर्मित वह मर्मस्पर्शी और भावमय रूप विधान है, जिसमें कलाकार का संवेदनशील हृदय और उसकी सूक्ष्म पर्यवेक्षण - दृष्टि अपना निजीपन उड़ेलकर प्राण प्रतिष्ठा करती है। कहने का भाव यह है कि रेखाचित्र में व्यक्ति के चरित्रोद्‌घाटन में उसके आत्मतत्त्व के साथ -

साथ लेखक के परतत्त्व का भी सामंजस्य होता है। रेखाचित्र को यदि व्यक्ति के चरित्र के उद्‌घाटन का शब्दचित्र कहा जाये तो इसमें कोई अतिशयाक्ति नहीं होगी।

3. भाव-व्यंजना— रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना इत्यादि का सजीव, मार्मिक एवं भावपूर्ण अंकन है। रेखाचित्रकार रेखाचित्र में जब बाहर से भीतर की ओर प्रवेश करता है तो वह अधिक गहराई में न जाकर भी संबंधित पात्र के दया, प्रेम, करुणा, सेवाभाव, ममता, अहिंसा, त्याग, वसुधैव कुटुम्बकम्, मनवता-हित, परोपकारिता जैसे गुणों का भी उद्‌घाटन करता है जो विषयगत न होकर स्थितिजन्य अधिक होता है। रेखाचित्रकार का मुख्य उद्देश्य चरित्र - विशेष के बाह्य पक्ष के साथ - साथ उसके आंतरिक पक्ष की मार्मिक एवं भावपूर्ण व्यंजना करना होता है। इस प्रकार, रेखाचित्र में पात्र के बाह्य आकार, रूपादि की रेखाएँ ही नहीं बोलती बल्कि अनेक भाव भी मुखरित होते हैं।

4. चित्रात्मकता— "रेखाचित्र चूँकि शब्दों में उभारा गया चित्र - प्रधान लेखन होता है, इसलिए चित्रात्मकता इसका मूलभूत तत्त्व है। रेखाचित्रकार रेखाचित्र में शब्दों की रेखाओं के द्वारा विवेच्य पात्र का ऐसा चित्र खींचता है कि उसका हू - ब - हू चित्र पाठक के समक्ष साकार हो उठता है। बनारसीदास चतुर्वेदी ने कहा है कि - "जिस प्रकार अच्छा चित्र खींचने के लिए कैमरे का लेंस बढिया होना चाहिए और फिल्म कोमल या सेन्सटिव, उसी प्रकार सफल चित्रण के लिए चित्रकार में विश्लेषणात्मक बुद्धि तथा भावुकतापूर्ण हृदय दोनों का सामजस्य होना चाहिए, उसमें पर - दुःख कातरता, संवेदनशीलता, विवेक और संतुलन इन सब गुणों की आवश्यकता है। वस्ततः चित्रात्मकता रेखाचित्र का वह प्रधान तत्व है, जो रेखाचित्र को रेखाचित्र का स्वरूप प्रदान करता है।

5. कलात्मकता— रेखाचित्र में साहित्यिकता का होना उतना ही आवश्यक है जितना कि किसी भी साहित्यिक विधा में। चूंकि प्रत्येक साहित्यिक विधा में साहित्यिकता का गुण उसके प्रारूप, शैली और योज्य उपादानों पर निर्भर करती है, ठीक उसी प्रकार रेखाचित्र की साहित्यिकता भी इसकी तात्त्विक अन्विति और शैली-विशेष पर निर्भर करती है।

6. उद्देश्य— रेखाचित्र अन्य रचनाओं के समान एक सोद्देश्य रचना होती है। रेखाचित्रकार का मुख्य उद्देश्य चरित्र - विशेष के बाह्य एवं आभ्यंतर पक्षों का मार्मिक, संवेदनशील ऐसा उद्‌घाटन करना होता है, जो सहृदय पाठकों के मन - मस्तिष्क को आलोड़ित, उद्वेलित कर सके। रेखाचित्र की सफलता इस बात में निहित होती है कि ये उद्देश्य आरोपित न होकर स्वतः स्फूर्त हों। वस्तुतः रेखाचित्र केवल रेखाओं द्वारा अंकन (जिनमें रंग नहीं भरे होते) अथवा शब्दचित्र मात्र नहीं है बल्कि पाठकों के विचारों, भावों को उद्‌बुद्ध करने का एक अमोघ मंत्र भी है।

रेखाचित्र का वर्गीकरण—

रेखाचित्र के वर्गीकरण का कोई निश्चित मापदण्ड या पैमाना नहीं है। सामान्य रूप से रेखाचित्र के वर्गीकरण के निम्नांकित रूप हो सकते हैं—

1. वर्णनप्रधान रेखाचित्र— जैसे पदम पराग (पदमसिंह शर्मा) रेखाचित्र (बनारसीदास चतुर्वेदी), माटी की मूरतें (रामवृक्ष बेनीपुरी), रेखाचित्र (प्रकाशचंद्र गुप्त), अमिट रेखाएँ (श्रीमती सत्यवंती मल्लिक) इत्यादि।

2. संस्मरणात्मक रेखाचित्र - यथा - दीनबंधु ऐंड्रयूज (बनारसी दास चतुर्वेदी), बोलती प्रतिमा (श्रीराम शर्मा), अतीत के चलचित्र, पथ के साथी (महादेवी वर्मा), वट पीपल (दिनकर), वो दुनिया (भगवतीशरण उपाध्याय) गांधी - संस्मरण और

विचार (काका कालेलकर), संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ (दिनकर), स्मृति की त्रिवेणिका (लक्ष्मीशंकर व्यास), रेखाएँ और संस्मरण (क्षेमचंद्र सुमन) इत्यादि।

3. व्यंग्यात्मक रेखाचित्र— फूल और पत्थर (कृष्णचन्द्र), वे दिन वे लोग (शिवपूजन सहाय), बीती यादें (परिपूर्णानंद) इत्यादि।

4. संवेदनात्मक रेखाचित्र— लाल तारा (रामवृक्ष बेनीपुरी), राम पाठक की डायरी (रेणु), भूले हुए चेहरे(कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'), हम हशमत (कृष्णा सोबती) इत्यादि।

5. मनोवैज्ञानिक रेखाचित्र— कुछ ख्यालों में कुछ ख्वाबों में (शंकर दयाल सिंह), पुरानी स्मृतियाँ और नये स्केच (प्रकाशचंद्र गुप्त), महके आँगन चहके द्वार (कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर') इत्यादि।

6. रूपात्मक-प्रतीकात्मक रेखाचित्र— गेहूँ और गुलाब (रामवृक्ष बेनीपुरी), बोलती प्रतिमा (श्रीराम शर्मा), लाल तारा (रामवृक्ष बेनीपुरी) इत्यादि।

रेखाचित्र - संस्मरण में अंतर—

संस्मरण का अर्थ है सम्यक स्मरण। इसमें यथार्थ चित्रण के साथ भावना की गहनता होती है। किसी भी क्षेत्र के महान पुरुष के जीवन के महत्त्वपूर्ण अंश का साक्षात्कार करवाना इस विधा का ध्येय है। साहित्यिक विधाओं में 'संस्मरण' ही एक विधा है जिसे हम रेखाचित्र के सर्वाधिक निकट पाते हैं। इन दोनों का अंतर इतना सूक्ष्म है कि कभी - कभी संस्मरण को ही रेखाचित्र मान लिया जाता है। श्री बनारसी दास चतुर्वेदी ने लिखा है कि— "संस्मरण, रेखाचित्र और आत्मचरित्र इन तीनों का एक दूसरे से इतना घनिष्ठ संबंध हैं कि एक की सीमा दूसरे से कहाँ मिलती है और कहाँ अलग हो जाती है, इसका निर्णय करना कठिन है । "

महादेवी वर्मा ने इस संबंध में लिखा है कि— "इन स्मृति - चित्रों में मेरा जीवन भी आ गया है। यह स्वाभाविक भी था। अँधेरे की वस्तुओं को हम अपने प्रकाश की धुंधली या उजली परिधि में लाकर ही देख पाते हैं उसके बाहर तो वे अनंत अंधकार के अंश हैं। मेरे जीवन के परिधि के भीतर खडे होकर चरित्र जैसा परिचय दे पाते हैं, वह बाहर रूपांतरित हो जाएगा। फिर जिस परिचय के लिए कहानीकार अपने कल्पित पात्रों को वास्तविकता से सजाकर निकट लाता है , उसी परिचय के लिए मैं पथ के साथियों को कल्पना का परिधान पहनाकर दूरी की सृष्टि क्यों करती! परंतु मेरा निकटताजनित आत्मविज्ञान उस राख से अधिक महत्त्व नहीं रखता, जो आग को बहुत समय तक सजीव रखने के लिए ही अंगारों को घेरे रहती है। जो इसके पार नहीं देख सकता, वह इन चित्रों के हृदय तक नहीं पहुँच सकता।"

संस्मरणों में देश-काल का वर्णन अधिक मात्रा में करना अभिष्ट होता है, रेखाचित्र में यह वर्णन कम रहता है। संस्मरण अपेक्षाकृत अधिक आत्मनिष्ठ होते हैं। इसमें 'स्व' की भावना अधिक होती है। संस्मरण में लेखक सब कुछ आत्मकथा के रूप में व्यक्त करता है। संस्मरण का संबंध देश, काल और पात्र तीनों से रहने के कारण इसमें तीनों का वर्णन होता है, परंतु रेखाचित्र का देश और काल से प्रायः संबंध नहीं रहता। संस्मरण लेखक किसी भी शैली को अपना सकता है परंतु रेखाचित्र के लिए यह नितांत आवश्यक है कि वह सदैव चित्रात्मक शैली को ही अपनाए। रेखाचित्रों में चित्रण की प्रधानता होती है जब कि संस्मरणों में विवरण की। संस्मरणों में प्रसंगो और कथाओं का प्रयोग होता चलता है। घटित का विवरण और उससे वर्ण्य व्यक्ति की विशिष्टता या उपलब्धि पर संस्मरणों में प्रकाश डाला जाता है। रेखाचित्र में नपे-तुले शब्दों का प्रयोग अधिक होता है।